राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

बचन जो कि स्वामी जी महाराज ने आख़री रोज़, पेश्तर अन्तर ध्यान होने के, वास्ते हिदायत साधुओं व सतसंगियों व सतसंगिनों के, ख़ास ज़बान–ए– मुबारक से फ़र्माये–तारीख १५ जून सन् १८७८ ई. मुताबिक असाढ़ बदी १ पड़वा, सम्वत् १९३५ वि., रोज़ शनिश्चर, वक़्त अलस्सुबह।।

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

बचन जो कि स्वामी जी महाराज ने आख़िर रोज़, पेश्तर अन्तर ध्यान होने के, वास्ते हिदायत साधुओं व सतसंगियों व सतसंगिनों के, ख़ास ज़बान–ए–मुबारक से फ़रमाये–तारीख १५ जून सन् १८७८ ई. मुताबिक असाढ़ बदी १ पड़वा, सम्वत् १९३५ वि., रोज़ शनिश्चर, वक़्त अलस्सुबह।।

बचन १

चंदरसेन सतसंगी जो कि हर पूनो को मौज़े कुरसंडे से, वास्ते दर्शन हुज़ूर स्वामी जी महाराज के आता था, उसको स्वामीजी महाराज ने पास बुला कर फ़र्माया कि तुम बैठ जाओ और दर्शन ख़ूब ग़ौर से कर लो, और इस स्वरूप को अपने हिरदे में रख लो क्योंकि दूसरी पूनो को तुमको दर्शन न होंगे। तुम्हारी भक्ति पूरन हुई।।

बचन २

वक़्त आठ बजे सुबह के, स्वामीजी महाराज ने फ़र्माया कि अब चलने की तैयारी है। इसके बाद महाराज ने सुरत चढ़ाई और सब भास खैंच लिया, सिर्फ़ डेले आँखों के नज़र पड़ते थे, और बदन काँपने लगा और नाखून हाथों व पैरों के पीले हो गये थे। फिर पौन घण्टे के बाद सुरत उतारी और उस वक़्त यह फ़र्माया कि मौज फिर गई, अभी देर है। तब लाला परतापसिंह ने पूछा कि कब की मौज है ? उस पर फ़र्माया कि बाद दोपहर के।

बचन ३

फिर भारासिंह साधू और सतसंगियों ने कुछ रुपया भेंट करना शुरू किया और बंदगी करने लगे। उस पर लाला जगन्नाथ खत्री, पड़ौसी, कहने लगे कि इस वक़्त महाराज का ध्यान अन्तर में लगने दो, रुपया पेश करने का यह वक़्त नहीं है। तब स्वामीजी महाराज ने उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर यह फ़र्माया कि ध्यान इसका नाम है कि जब चाहा तब सुरत पहुँचा दी, और जब चाहा तब उतार ली, और हमने तो डेरे रात को ही पहुँचा दिये और सुरत सत्तपुरूष की गोद में पहुँचा

दी, मगर तुम लोगों से कुछ बचन कहने को उतर आये हैं।।

बचन ४

फिर यह फ़र्माया कि तुम जानते हो कि मेरी छः वर्ष की उम्र थी, जब से मैं परमार्थ में लगा हूँ। तब यह अभ्यास पक्का हुआ है। और यह दृष्टांत फ़र्माया कि कच्चा पैराक हो, उसको डूबते वक़्त कहो कि अब तू पैर, तो उस वक़्त वह क्या पैरेगा? वह तो डूबे ही गा—और जो लड़कपन से पैरना सीख रहा है, उसको दरिया में डाल दोगे तो वह नहीं डूबेगा। और ये देह तो खलड़ी है। यह तो किसी की भी नहीं रही है। इसका क्या है ? और ज़िन्दगी भर का भजन—सुमिरन सिर्फ़ इसी वास्ते है कि इस वक़्त न भूले। इस वास्ते ऐसा नाम का अभ्यास करो कि चलते—फिरते नाम न भूले।

बचन ५

फिर स्वामीजी महाराज ने राय सालिगराम और कुल्ल साधुओं व सतसंगियों व सतसंगनियों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया कि जैसा मुझको समझते हो वैसा ही अब राधाजी को समझना, और राधाजी और छोटी माताजी को बराबर जानना।

बचन ६

फिर राधाजी महाराज को हुक्म दिया कि शिब्बो और बुक्की और बिश्नो को पीठ न देना।

बचन ७

सनमुखदास को फ़र्माया कि इसको सब साधों का महन्त किया और यह फ़र्माया कि ऐसी महन्ती नहीं कि जैसी दुनिया में जारी है। यानी सनमुखदास और विमलदास साधों के अफ़सर हुए और इन्तज़ाम और बन्दोबस्त साधों का इनके ताल्लुक़ रहेगा और बाग़ में ठहरें और बाग़ का मालिक परतापा।।

बचन ८

फिर फ़र्माया कि गृहस्थ अपनी पूजा साधों से न करावें।

बचन ९

फ़िर रिद्दी बीबी ने पूछा कि हमारे वास्ते किसको तजवीज़ किया है ? इस पर फ़र्माया कि गृहस्थियों के वास्ते तो राधाजी, और साधों के वास्ते सनमुखदास।।

बचन १०

स्वामीजी महाराज ने फ़र्माया कि गृहस्थी औरतें बाग़ में जाकर किसी साधू की पूजा और सेवा न

करें। इन सबको चाहिए कि राधाजी के दर्शन और पूजा करें। फिर फ़र्माया कि शेर और बकरी को एक घाट पानी मैंने पिलाया है, और किसी का काम नहीं है कि ऐसा करे।

बचन ११

फिर बीबी बुक्की ने अर्ज़ किया कि स्वामीजी मुझको भी अपने साथ ले चलो, इस पर फ़र्माया कि तुम घबराओ मत, तुमको जल्दी बुला लेंगे, तुम अन्तर में चरनों की तरफ़ ज़ोर देना।।

बचन १२

फिर लाला परतापसिंह ने अर्ज़ किया कि मुझको भी अपने संग ले चलो। इस पर फ़रमाया कि तुम से अभी बहुत काम लेना है। बाग़ में रहोगे और सतसंग करोगे और कराओगे।।

बचन १३

फिर सुदर्शनसिंह ने पूछा कि जो कुछ पूछना होवे तो किससे पूछें ? उस पर फ़र्माया कि जिस किसी को पूछना होवे तो सालिगराम से पूछे।।

बचन १४

फिर लाला परतापसिंह की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया कि मेरा मत तो सत्तनाम और अनामी का था, और राधास्वामी मत सालिगराम का चलायाँ हुआ है, इसको भी चलने देना और सतसंग जारी रहे और सतसंग आगे से बढ़ कर होगा।।

बचन १५

फिर फ़र्माया कि सब सतसंगी, ख़्वाह गृहस्थी या भेष, किसी तरह न घबरावें। मैं हर एक के अंग–संग हूँ और आगे को सब की समहाल पहिले से विशेष रहेगी।।

बचन १६

फिर फ़र्माया कि कलजुग में और कोई करनी नहीं बनेगी, केवल सतगुरु के स्वरूप का ध्यान और नाम का सुमिरन और ध्यान नाम का बनेगा।।

बचन १७

लाला परतापसिंह ने अर्ज़ किया कि शब्द खुले। इस पर फ़र्माया कि धुन का सुनाई देना और उसमें

आनंद का प्राप्त होना, यही शब्द का खुलना है।।

बचन १८

फिर स्वामीजी महाराज ने राधाजी की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया कि मैंने स्वार्थ और परमार्थ दोनों में क़दम रक्खा है यानी दोनों बरते हैं, सो संसारी चाल भी सब करना और साधों को भी अपनी रीति करने देना।।

बचन १६

फिर स्वामीजी महाराज सहन में से, भीतर कमरे के, तशरीफ़ ले गये और क़रीब पौने दो बजे, बाद दोपहर के अन्तर्द्धान हुए।।

———————

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

बचन जो कि हुज़ूर मुअल्ला व मुक़दस स्वामी जी महाराज ने बजवाब प्रेमनामों, हुज़ूर साहब के लिखवाये—बक़लम चाचा जी परतापसिंह साहब

जवाब—१

अज़ीज—अज़—जान[1] तुम हमारी तरफ़ से बहुत खुशी राज़ी रहना और भजन और ध्यान और मालिक की याद में लगे रहना और मालिक की दया तुम पर वैसी ही है कि जैसी दया पहले तुम पर बन रही थी—और साहब की राज़ी में राज़ी रहना। आगे पीछे की कल्पना छोड़ कर वक़्त भजन के सुरत, शब्द में रखना।।

दोहा

सुरत बसाओ शब्द में, शब्द गगन के माहिं।
बिरह बसाओ हिये में, हिया तिरकुटी माहिं।।१।।

१—प्यारे जान से।

सुरत शब्द इक अंग कर, देखो विमल बहार।
मध्य सुखमना तिल बसे, तिल में जोत अकार।।२।।

प्रेम और विरह से मन और सुरत सावधान कर के भजन में बैठा करो। गुरू की कृपा से कारज होता रहेगा, दिल–जमई रखना, कुछ अंदेशा न करना।

जवाब–२

मज़मून तुम्हारा ग़ोश गुज़ार[१] हुजूर स्वामीजी महाराज के कर दिया और मुराद मतलूबा[२] तुम्हारी सुना दी। हुजूर बहुत राज़ी हुए और फ़र्माया कि अर्ज़ उनकी क़बूल हुई। प्रेम और भक्ति, विरह और अनुराग अब रोज़–ब–रोज़[३] बढ़ता जावेगा। साहब चाहेंगे और साहब ने चाहा है कि एक लमहा[४] भी तुम न भूलोगे। अंतरी याद झीनी सदा बनी रहेगी, दिल–जमई रखना, अपनी तरफ़ से तुमको बख़शिश होती है, वरना तुमने कुछ इस क़दर हुजूर को राज़ी नहीं किया, जो ऐसी बख़शिश उज़मा[५] तुमको मिले। जैसे हठीले मँगता को भी दाता को दया के स्वभाव से देना पड़ता है, सो जाओ, दिया, दिया, दिया। बस, अब जल्द ही आओगे। साहब मालिक हैं।

१–सुना दिया। २–चाही हुई।
३–दिन–ब–दिन। ४–पल। ५–भारी।

जवाब—३

सतगुरु के प्यारे, साहब के दुलारे, शब्द के सँवारे, अज़ीज़ मेरे सालिग राम ! साहब की याद में रहना। दुआ यह है सच्चा मन, सच्ची सुरत, सच्चा प्रेम, सच्ची भक्ति, सच्चा अनुराग, सच्ची निरत से गुरू के ध्यान में रह कर मुताला करना। प्रेमनामा विरह का भरा हुआ आया। हाल उसका ज़ाहिर व पोशीदा[१] प्रकट हुआ। हरचंद साहब की दरगाह में, वास्ते हाज़िर होने तुम्हारे के, अर्ज़ करता रहता हूँ, लेकिन जवाब साफ़ अभी हासिल नहीं हुआ। लेकिन सूरत हाल से कृपा व दया ख़ास तुम पर ज़्यादा मालूम होती है। इस वास्ते इज़तराबी[२] छोड़ कर मौज और रज़ा को निहारते रहो और रक्षक अपना हुज़ूर को जानते रहो। अगरचे दर्शन और सतसंग और सेवा और हाज़िरी से महरूम हो, मगर इसमें नुक़सान अपना कुछ न जानो। शब्द स्वरूप से आठ पहर तुम्हारे पास मौजूद हैं। कल्पना छोड़ कर सुरत–निरत से झाँकते रहो। दीदार पाओगे। ये दिन हिकमत से खाली नहीं हैं। विसाल[३] में कुछ मज़ा और लज़्ज़त है, लेकिन बीचबीच में हिज्र[४] भी बेहतर है—और यक़ीन है कि अनक़रीब[५] हाज़िर

१—गुप्त। २—घबराहट।
३—मिलाप। ४—जुदाई। ५—जल्द।

हुआ चाहते हो। जो कुछ कमाई भजन की बन पड़े, सोई सरमाया[1] मेरे आगे लाकर रक्खो। मुझको तुम्हारी इसी कमाई की आस है। सब के वास्ते कमाओ हो, मेरे भाग की क्या कसर है जो इस कमाई में काहिली है ? अगर खाली हाथ आ खड़े होगे, तो कपूत और निखट्टुओं में दाख़िल करके निरादर किया जायगा। ख़बरदार! होशियार ! सम्हल कर मेरे पास आना। निकाले तो गये हो, फिर भी निकाल दिये जाओगे। मुनासिब है कि आलस छोड़ कर, मन को समझाकर, भजन में मेहनत करना। ख़ुलासा मतलब यह है कि कोई ऐसा तोहफ़ा नादिर[2] और नवीन लिए आना कि सुनने और देखने उसके से, मुझको ख़ुशी यकायक पैदा हो। आइन्दा साहब मालिक हैं—और साहब को अपने ऊपर मेहरबान समझना।।

जवाब—४

अज़ीज़ मेरे सालिगराम, साहब की याद में रहो, साहब को सदा अपने अंगसंग जान कर रंग रहो—और तुम्हारी बेक़रारी और इज़तराबी[3] दिनों जुदाई की बसबब कसरत[4] मुहब्बत के जैसी कि है, मालूम हुई।

१—पूँजी। २—अचरजी। ३—घबराहट।
४—ज़्यादती।

लेकिन साहब तो तुम्हारे पास हर वक़्त मौजूद रहते हैं। तुम किस वास्ते इस क़दर मुज़तरिब[1] हो ? यह भी एक तरह का मज़ा है कि प्रेमियों के वास्ते मुक़र्रर किया है, और बीच हालत जुदाई के, इसकी लज़्ज़त आती है। तलख़ी[2] इसकी बहुत शीरीं[3] है। दर्शन ज़ाहिरी अगरचे तुमको कभी कभी हैं, मगर शब्द स्वरूप से ख़बर–गीराँ[4] और तुम्हारे संग हैं।

दोहा

शब्द स्वरूपी संग हैं, कभी न होते दूर ।
धीरज रखियो चित्त में, दीखेगा सत नूर ।। १ ।।
सत्तनाम सतपुरुष का, सत्तलोक में पूर ।
सुरत चढ़ाओ सुर्त में, दर्शन हाल हुजूर ।। २ ।।
प्रेम प्रीत राचे रहो, कुमति कुटिल से दूर ।
मन सूरत से जूझ कर, रहो शब्द में सूर ।। ३ ।।

आगे तुम्हारा प्रेमनामा सब सतसंगियों की सभा में सुनाया गया। सुन कर सब बहुत राज़ी हुए और एक गूना[5] सब को तलक़ीन[6] हुई और प्रेम की दशा मालूम

१–घबराते। २–कड़वाहट ३–मीठी
४–खबर लेने वाले। ५–तरह ६–शिक्षा

हुई। साहब अपनी कृपा और दया से तुमको पूरा प्रेम बख़्शेंगे। आगे साहब मालिक हैं और राधाजी की तरफ़ से ख़ुशी राज़ी रहना, हम तुमसे बहुत राज़ी हैं और तुम्हारे यहाँ आने की जल्दी कह कर बुलवाऊँगी।।

जवाब—५

हुक्म हुआ कि जो कुछ तुमने हुजूर दरबार सतगुरु साहब के से माँगा तो सब तुमको मिला। मुज़तरिब[1] न हो। बेक़रारी छोड़ कर याद गुरु के चरनों की रक्खो। तुम जानते नहीं कि गुरु क्या हिकमत खेलते हैं। आन तो मिलो ही गे, लेकिन बहुत सा काल का सिर फोड़ा जाता है। तुम यह न जानो कि मुझको जुदा कर दिया है, बल्कि काल को फ़िदा[2] किया जाता है तुम पर। और किस किस का भला इस अमर में करना मंजूर है, जब जुदाई तुम्हारी सही है। और तुम ख़ुद सब जानते हो, जानबूझ कर ऐसे क्यों तड़पते हो ? उपकारियों की यही दशा होती है — खाना, पीना, सोना, हँसना, बोलना, आराम जान व जिस्म[3] का न होना, यह जागीर उनकी है। लेकिन काल को कुछ थोड़ाथोड़ा ज़ोर देते हो, सो बरवक़्त मिलाप के गुरु सम्हालेंगे, ख़ातिर जमा रक्खो। और कुछ हाज़िरी पर मुनहसिर नहीं है और हाज़िर तो अब हुआ ही चाहते हो—जानते हो, गुरु की मौज और रज़ा निहारते रहो,

१—अधीर। २—न्योछावार। ३—तन।

सो वे तो सदा कृपाल और दयाल हैं, कभी मेहर से ख़ाली न रक्खेंगे। सुख का सागर तुम्हारे वास्ते भरा जाता है, मंजन करोगे, अमृत पियोगे और बहुत सा बाँटोगे—और तुमको क्या माँगने का शऊर है जो माँगोगे। माँगना तो तुमको आता ही नहीं। दाता शरमिंदा है तुम्हारी माँग देने से—ऐसी तो नालायकों में होती है। यह क्या तुच्छ—तुच्छ माँग है ? अब माँगना आगे कुछ जरूर नहीं—अब तो जो कुछ गुरू अपनी मरज़ी से देते जावें, उन चीज़ों को देखते जाओ, जोकि कभी तुम्हारे ख़्वाब व ख़्याल में न आई—पस माँगे क्या लड़का, बड़ा हौसला करे तो गेंद बल्ला या चकई—लट्टू माँगे, और बाप ने वास्ते उसके बग़ीचा और शीश महल तैयार कराया है, सो तो वह क्या जाने ? लेकिन यह दिन तफ़ूलियत[1] के गुज़रने के बाद चाँद सूरज की गेंद होगी और कहकशाँ[2] का डंडा होगा और स्वामी सेवक दोनों आपस में सुन्न और महासुन्न के मैदान में खेलेंगे और शब्दों की धूमाधामी मचेगी। एक तरफ़ बहनें तुम्हारी खड़ी होंगी और एक तरफ़ भाई तुम्हारे खड़े होंगे। जब कि बहारों को याद करोगे कि क्या दशा तुम्हारी होगी—सो यह तो एक नमूना है और वह भंडार तो अथाह है और अब तैयारी है यह सब सैर दिखाने की—पस सबर करो, संतोष करो, आगे सतगुरु मालिक हैं।।

१—लड़कपन। २—आकाश गंगा।